चमार और मोची

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाओी देसाओी अंक ४६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १२ जनवरी, १९५२

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

१२

नवां मुकाम

[ता० २३-४-'५१ : तिरगळापली : १० मील]

सिवन्नागुड़ासे सबेरे पांच बजे रवाना होकर करीब ८॥ बजे तिरगळापल्ली पहुंचे। रास्ते भर अत्यंत सुंदर प्राकृतिक दृश्य देखनेको मिले। शुरूमें गांवके बाहर तक गांववाले रामधुन गाते हुओ पहुंचाने आये। फिर अत्यंत छोटी पगदंडीके रास्ते चलना पड़ा। दोनों-तीनों तरफ पहाड़ियां, बीचमें सुन्दर ताड़वन, ताड़वन पार किया तो अमराओी और अमराओीके बाद धानकी खेती। फिर पहाड़ी। छोटे-छोटे झरने जहां-तहां आंखोंको प्रसन्न करते। धानकी खेती कट चुकी थी। अिसलिअे रास्ता खोजनेमें तकलीफ नहीं हुओी। बरसात रहती या धानकी खेती हरी-भरी रहती, तो रास्ता निकालना भी कठिन होता। अिधरसे लोग अकसर कम गुजरते। रास्तेमें जितने गांव पड़े, सब कम्युनिस्टोंके अड्डे माने जाते थे। अेक झरनेके पास बड़ी चट्टानके सहारे कुछ सोल्जरोंके साथ अेक अफसर कम्युनिस्टोंकी खोजमें डेरा डाले हुअे थे। चट्टान पर अुनकी घड़ी और अखबार पड़े थे। हम लोगोंको दो-तीन दिनसे ताजे अखबार देखनेको नहीं मिले थे। अफसरने अपना अखबार हमें दे दिया। पहाड़ी चढ़ कर अूपरके मैदान पर आये, तो तिरगळापल्लीके लोग भजन गाते हुअे हमें लेने आये। अब रास्ता अच्छा था। लक्ष्मीबहनने कहा कि अिस यात्रामें सारी प्रकृति कितनी अनुकूल है। मानो पंच-महाभूत अपनी तरफसे पूरी मदद पहुंचाना चाहते हैं।

अभी मुकाम २ मील दूर था। जो लोग हमें लेने आये थे, वे रास्तेभर अनेक मधुर गीत गाते रहे। पहुंचने पर देखा कि गांव बहुत साफ-सुथरा रखा गया है। अिस गांवके पुराने सेवक राजरेड्डीकी हत्या कम्युनिस्टोंने कर डाली थी। गांववाले राजरेड्डीको भूल नहीं सकते थे। हर किसीके मुंहसे अुनके लिअे प्रेमभाव प्रगट हो रहा था। हरिजन भाअियोंके लिअे अुन्होंने अपनी जमीन पर सुंदर मकान बनवाये थे। राजरेड्डीकी हत्याका हाल सुनकर विनोबाजीके हृदयको काफी दुःख पहुंचा। सज्जनोंकी हत्या द्वारा गरीबोंकी सेवा करनेकी आशा कम्युनिस्ट करते हैं। अेक विचित्र-सी बात थी। मन ही मन वे काफी गंभीरतासे सोच रहे थे। तेलंगानाकी समस्याअें नया-नया रूप लेकर रोज प्रगट हो रही थीं। विनोबाजी नया-नया विचार देकर लोगोंको अहिंसात्मक क्रांतिके लिअे प्रेरित कर रहे थे।

अरण्यकांडमें जहां राक्षसों द्वारा मारे गये साधु-संतोंकी हड्डियोंका ढेर रामचंद्रजी देखते हैं, वहां अुनके मुंहसे सहसा प्रतिज्ञाके शब्द निकलते हैं कि मैं अिन राक्षसोंका अंत करके ही रहूंगा। गुसाओंजीने बहुत मार्मिक शब्दोंमें कहा है – 'भुज अुठाओ प्रण कीन्ह!'

मानो अैसी ही कुछ प्रतिज्ञा विनोबा भी आज मन ही मन कर चुके थे। शामकी प्रार्थनामें दिन भरके अनुभवका सार बतलाते हुअे विनोबाने कहा:

"आपका यह गांव बहुत ही छोटा है, लेकिन फिर भी अितनी स्त्रियां और पुरुष दूर-दूरसे यहां अिकट्ठे हुअे हैं। आप सब लोग अेक-दूसरेके साथ प्रेमसे रहते हैं, अिसलिअे मैं आपका आभार मानता हूं। आजकल मैं जहां-जहां जाता हूं, श्रीमानोंसे दान मांगता हूं। मैं कहता हूं कि गरीबोंके लिअे मुझे जमीन दीजिये, तो गांववाले बड़े-बड़े लोग प्रेमसे मुझे कुछ न कुछ दे ही देते हैं। लेकिन आपका यह गांव बहुत ही छोटा है। और अेक मनुष्यको छोड़कर बाकीके सारे लोग छोटे-छोटे काश्तकार हैं। अतः मैंने आपके गांवसे बहुत दान मिलनेकी आशा नहीं रखी थी। लेकिन फिर भी अिस गांवसे मुझे काफी दान मिल गया और मेरा पेट भर गया। लक्ष्मीबाओी कहती हैं कि तुम्हारा पेट छोटा है तो जल्दी भर जाता है। लेकिन छोटे पेटमें भी भूख बहुत लगती है, क्योंकि सारे गरीब लोगोंकी भूख मुझे लगती है। अिसलिअे जितना मिले, अुतना मुझे जरूर चाहिये। लेकिन अिस गांवके हिसाबसे ७०-८० अेकड़ जमीन मिली है, तो मैं मानता हूं कि मुझे अच्छा दान मिला है। दानमें जब प्रेम रहता है, तो दानकी कीमत बढ़ती है। अिस गांवमें जो जमीन दानमें मिली है, अुसे देनेवालेने बहुत प्रेमसे दी है। और जो प्रेमसे दिया जाता है, वही मैं लेता हूं। तो वह जो जमीन मुझे प्रेमसे मिली है, अुसकी कीमत मेरे दिलमें बहुत ज्यादा है।

प्रेरक बलिदान

"अितने छोटे गांवमें अितना बड़ा दान मिल गया अुसका क्या कारण है, यह मैं सोचता था। मुझे पता चला कि यहांके अेक भाओी, जो यहां पर सेवा करते थे, कम्युनिस्टोंके हाथसे मारे गये हैं। वह भाओी आप लोगोंकी सेवा करते थे। आप लोगोंका अुन पर बहुत प्रेम था। अैसे मनुष्यकी यहां हत्या हो गओी है। लेकिन अुसका पुण्य आपके गांवमें काम कर रहा है। अिस गांवमें जो वातावरण है, जो अच्छी हवा है, अुसका मुख्य कारण अुस भाओीका बलिदान है। अिस तरह अिस गांवमें जो बड़ा भारी बलिदान हुआ है, अुसका स्मरण आपको हमेशा अच्छे काम करनेके लिअे प्रेरणा देगा। आज जो जमीन दानमें मिली है, अुसमें बहुतसी जमीन अुस शहीद भाओीके भाओीने दी है। अिस तरह आपके गांवमें प्रेम है, तो मैं आशा करता हूं कि आपका गांव सुखी रहेगा।

गुंडोंसे असहयोग करो

"आज जिस रास्तेसे घूमकर हम यहां आये, वह रास्ता जंगलमें से जाता था। चारों ओर पहाड़ थे। मैं मानता हूं कि अुस रास्तेसे शहरवाले लोग हमारे जैसे बहुत कम आते होंगे। लेकिन मुझे तो आप लोगोंके दर्शन लेने ही थे, अिसलिअे मैं आ गया।

www.vinoba.in

रास्तेमें हमने कुछ पुलिसके लोग देखे। अुनसे बात करनेसे मालूम हुआ कि अुन्होंने अिर्दगिर्द छापा मारकर कोअी चालीस-पैंतालीस कम्युनिस्टोंको गिरफ्तार कर लिया है। वे कहते थे कि हम लोगोंने कम्युनिस्टोंको गिरफ्तार कर लिया, लेकिन वे लोग तो गुंडे सरीखे हैं। तो अिन लोगोंको कम्युनिस्ट कहें या गुंडा कहें? मैं तो हमेशा यही कहता हूं कि जब मनुष्य अच्छे अुद्देश्यसे भी बुरे साधन अिस्तेमाल करता है, तो वह गुंडे लोगोंको अुत्तेजन देता है। 'कम्युनिस्ट कहते हैं कि हम गरीब लोगोंका भला चाहते हैं। अैसा वे कहते तो हैं, लेकिन रास्ता अुन्होंने डाका, जबरदस्ती, खून, जुल्मका ले लिया। अिसलिअे अुस मार्गमें दूसरे गुंडे भी शामिल हो जाते हैं। कोअी पहचान नहीं सकता कि कम्युनिस्ट कौन और गुंडा कौन है? क्योंकि दोनोंका मार्ग अेक ही हो जाता है। अिस तरह हम गुंडापनको अुत्तेजन देते हैं, तो कोअी भी भला काम नहीं कर सकते। तो आप लोगोंको मुझे कहना है कि जो अिस तरह गुंडापन करते हैं, अुनके साथ आपको सहानुभूति नहीं रखनी चाहिये और अुनका डर भी नहीं रखना चाहिये। कोअी कम्युनिस्ट रातको आता है, धमकाता है और कहता है, दे दो हमको, तो आप डरसे देते हैं। कुछ लोग सहानुभूतिसे देते हैं, कुछ लोग डरसे देते हैं। मैं कहता हूं कि जो लोग बुरे मार्ग पर चलते हैं, अुनका भय भी नहीं रखना चाहिये और अुनसे सहानुभूति भी नहीं रखनी चाहिये। मेरी समझमें नहीं आता कि अेक सज्जनकी हत्या करके किस तरह गरीबोंका अुद्धार होनेवाला है?

अंग्रेजी राज्यके संस्कार

"अिस तरहके विचार हिन्दुस्तानमें जो बहुत फैल गये, अुसका कारण यहां अंग्रेजी राज्य था। अंग्रेजोंके राज्यमें हमारे बहुतसे विद्वान् अंग्रेजों-से बन गये। और फिर युरोपमें जो बुरे-बुरे विचार चलते हैं, वह हमने सीख लिये। युरोपके लोग लड़ते-लड़ते थकते नहीं, लड़ते ही जाते हैं। तीस सालके अंदर दो महायुद्ध लड़ चुके और अब तीसरे महायुद्धकी भी तैयारी चल रही है। तो अैसे लोगोंके विचार पढ़कर हमारे दिमाग बिगड़ जाते हैं। आप जानते हैं कि गांधीजीकी हत्या करनेवाला जो मनुष्य था, अुसने यह कहा था कि मैं हिन्दू-धर्मके भलेके लिअे गांधीजीकी हत्या करता हूं। तो गांधीजीकी हत्या करनेवाला भी यह कहता है कि मैं हिन्दू-धर्मका अुद्धार करनेवाला हूं। वैसे ही कम्युनिस्ट कहते हैं कि हम सज्जनोंकी हत्या करते हैं तो गरीबोंका अुद्धार होगा। तो वह रास्ता छोड़ दीजिये। मैं कम्युनिस्टोंको भी समझाता हूं कि अिस रास्तेसे तुम्हारा अुद्देश्य कभी सफल नहीं होगा।"

१३

दसवां मुकाम

[ता० २४-४-'५१: नागिळ्ला: १० मील]

नागिळ्ला अब तक नलगुंडा जिलेमें ही था; लेकिन अभी-अभी वह महबूबनगर जिलेमें ले लिया गया है। नागिळ्ला और अजलापुरम् (आगामी मुकाम) ये दो गांव महबूबनगर जिलेके अिस यात्राके बीच पड़ते थे। गांवके बाहर अेक बगीचेके पास अेक बड़े पेड़के नीचे विनोबाजीके लिअे झोंपड़ी बनायी गअी थी। बीचमें अेक बड़ा कुआं था और अुसके बाद अेक बड़ा मंडप — जो साथियों, अन्य मेहमानों, भजन-मंडलियों आदिके लिअे बनाया गया था। गांववाले भजन गाते और नाचते-कूदते विनोबाजीके स्वागतके लिअे आये थे। गांवमें से होते हुअे जुलूस निवास पर पहुंचा, तो बीचमें जगह-जगह बहनों द्वारा स्वागत किया गया। दोपहरमें २ बजेसे ही स्त्रियोंकी भीड़ शुरू हो गअी। सैकड़ों स्त्रियां जमा हो गअीं। लक्ष्मीबहन और मदालसाबहनने अुनसे बातचीत शुरू की। अिधर शिकायतें भी आने लगीं। दरखास्तें लिखनेके लिअे दो कार्यकर्ता बैठ गये। अुधर भूस्वामियोंसे विनोबाजीकी बातचीत हुअी, तो ४७ अेकड़ जमीन अुन्होंने विनोबाजीको दी। शामको प्रार्थना-सभामें भाषण देते हुअे विनोबाने कहा:

परमेश्वर—नामकी अखंड गंगा—धारा

"आप लोगोंके अिस रमणीय प्रदेशमें हम पैदल घूम रहे हैं और हम लोगोंको सब तरहसे बहुत आनंद मिल रहा है। अेक बड़ा आनंद यह है कि लोग स्वागतके लिअे आते हैं, तो परमेश्वरका भजन करते रहते हैं। अेक-अेक मील दूर तक आते हैं और रास्ते भर अीश्वरके भजन गाते हैं, नामस्मरण करते हैं। तेलगूमें भजन गाते हैं, हिन्दीमें भी भजन गाते हैं। हिन्दुस्तानकी यही विशेषता है। यहां पर बड़े-बड़े असंख्य राजा आये और गये। राजा लोग तो अनगिनत हो गये, लेकिन अुन लोगोंका, अुन राजाओंका, हमने कोअी हिसाब ही नहीं रखा। हम लोगोंने तो अेक ही राजा रामको पहचाना। बाकीके राजा नामधारी आये और गये, हम अुनको भूल गये। लेकिन यहां पर परमेश्वरका नाम गंगा नदीके समान अखंड निरंतर बहता है। गंगा नदी हर जगह मौजूद नहीं है, आपकी गोदावरी और कृष्णा भी हर जगह नहीं मिलती है, लेकिन यह नाम-गंगा हर गांवमें मिलती है। आपके तेलगू मुल्कमें आदिलाबादसे लेकर ४-५ जिले मेरे घूमनेमें आ गये। जबसे मैंने नलगुंडा जिलेमें प्रवेश किया, तबसे लोग कहते हैं कि कम्युनिस्टोंके अिलाकेमें आप आ गये। लेकिन आदिलाबादमें भजनका जो तरीका चला, वही तरीका मैंने नलगुंडा जिलेमें भी देखा। अतअेव अिसका यह अर्थ हुआ कि जैसे राजा लोग आये और गये, वैसे कम्युनिस्ट भी आयेंगे और जायेंगे, लेकिन रामनाम बचेगा।

अद्वेष्टा सर्व भूतानाम्

"लोग परमेश्वरका भजन-स्मरण हिन्दुस्तान भरमें करते हैं। यह हिन्दुस्तानका बड़ा भारी बल है, लेकिन अुस नामस्मरणका पूरा अर्थ हम लोग समझे नहीं हैं। जो नामस्मरण करता है, वह अपनेको परमेश्वरका भक्त मानता है। परमेश्वरका भक्त यानी क्या और वह कहां रहता है? हम लोगोंको समझना चाहिये कि परमेश्वर कहीं विश्वके कोनेमें नहीं रहता। कहीं वैकुंठमें, कहीं कैलासमें, कहीं स्वर्गमें छिपा हुआ नहीं है। वह तो हर प्राणीके हृदयमें मौजूद है। जब हम अीश्वरके भक्त होनेका दावा करते हैं, तो अुसका मतलब यह होता है कि सब प्राणियों पर प्रेम करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं। जो परमेश्वर भूतमात्रके हृदयमें मौजूद है, अुसके हम सेवक बन जाते हैं। मतलब कि अीश्वरका नामस्मरण और सर्व-भूतोंमें प्रेम-भाव, ये दोनों समान शब्द हो गये। और यही भगवानने हमको गीतामें समझाया है। अुन्होंने वहां भक्तोंके लक्षण बताये हैं। लक्षण यह नहीं बताया कि वह गाता है और नाचता है, बल्कि यह बताया कि वह किसीका द्वेष नहीं करता — 'अद्वेष्टा सर्व भूतानाम्।' मैं अिस मुल्कमें अिसीलिअे घूम रहा हूं कि सब लोगोंमें प्रेमभाव बना रहे और सबके दिलोंमें अेक-दूसरेको स्थान मिले। यही मेरा यहां आनेका अुद्देश्य है। मैं अपनेको शांति-सेनाका अेक सैनिक मानता हूं। मेरा धंधा यह है कि जितनी मुझमें ताकत है, अुसके अनुसार जहां-जहां अशांति है, वहां-वहां पहुंच जाना। तो आपके प्रांतमें मैंने सुना कि बहुत गड़बड़ है, लोग अेक-दूसरेका द्वेष किया करते हैं। अिस वास्ते मैं यहां पहुंचा।

"तो मैं कहता था कि आपके अिस मुल्कमें परमेश्वरका नाम-स्मरण चलता है और अेक-दूसरेका द्वेष-मत्सर भी चलता है। अिन दोनोंका मेल नहीं है। अगर हम द्वेष करते हैं, तो हमारा रामनाम मिथ्या है।

www.vinoba.in

पैसा नहीं प्रेम

"मैं आजकल जहां जाता हूं, वहां श्रीमान लोगोंको कहता हूं कि मुझे कुछ जमीन दानमें दो। मांगनेवाला मिल गया, तो थोड़ा दे भी देते हैं। अिस गांवमें कोअी ४०-४५ अेकड़ दान हमको मिल गया है। अिसके पहले कल अेक छोटासा गांव आया था, वहां पर अस्सी अेकड़ जमीन हमको मिली। लेकिन यहां जो बड़े लोग हैं, वे कहते हैं कि हमारे पास जमीन तो काफी थी, लेकिन हमने बहुतसी बेच डाली है और अपने लिअे जितनी जमीन चाहिये, अुतनी रखी है। अब अुन्होंने जमीन बेच डाली है, तो मैं अुनसे पैसा मांग सकता था। लेकिन मैं पैसा नहीं लेता, पैसेसे मेरा वैर है। अिसलिअे अुन्होंने जमीन बेच डाली और अुसके पैसे जो अुनकी जेबमें हैं, अुन पर मेरी नजर नहीं जाती। अुनके पैसे पर नजर रखना मेरा काम नहीं है। वह सरकारका काम है। लेकिन अुनके पास जो जमीन बची है, अुसीमें से अुन्होंने ४०-४५ अेकड़ जमीन दे दी। यहां जो गरीब लोग हैं, अुनके लिअे वह जमीन दे दी जायेगी।

"मैं आपको कहना चाहता हूं कि मेरे लिअे अिस जमीनका भी कोअी महत्त्व नहीं है। लोग कहते हैं कि हम जमीनके मालिक हैं। जमीन कायम रहती है और ये लोग तो मर जाते हैं और मिट्टी बनकर जमीनमें दाखिल हो जाते हैं। और फिर भी वे कहते हैं कि हम जमीनके मालिक हैं! अरे, तुम जमीनके मालिक हो, या जमीन तुम्हारी मालिक है? अिसलिअे अिस जमीनकी मेरे लिअे कौड़ीकी कीमत नहीं है। लेकिन मैं जो भी जमीन मांगता हूं, वह सिर्फ प्रेम-भाव बढ़ानेके लिअे। जिन लोगोंने दान दिया, अुन्होंने अगर प्रेमसे दान दिया है, तो अुसकी बहुत कीमत है।

'अखिल भूत मुलंदु . . . समहितत्वं' . . .

"तो मेरा धंधा है, गांवमें प्रेम भाव बढ़ाना। कम्युनिस्टोंका दावा है कि वे गरीबोंकी सेवा करना चाहते हैं। कम्युनिस्टोंकी बड़ी-बड़ी किताबें हैं। अुनके विचारोंकी कुछ किताबें मैंने पढ़ी हैं। अुन पुस्तकोंमें लिखा है कि जितने गरीब हैं, अुन सबकी सेवा करनी चाहिये, अुन सबको श्रीमानोंके बराबर हक मिलने चाहियें। तो यह जो अुनका विचार है, वह कोअी नया विचार नहीं है। आपके 'पोतना' महाकवि पोतना-भागवत्में भी यह बात बता चुके हैं। 'तनयंदु अखिल भूत मुलंदु ओक भंगि समहितत्वं बुत जरगुवाडु' अर्थात् श्रीमान और गरीब, अिस भेदके लिअे गुंजाअिश नहीं है। समझना यही चाहिये कि जितनी जमीन है, अुतनी सब लोगोंकी मिल करके है। कम्युनिस्टोंका यह जो कहना है, वह कहना सत्य है। लेकिन अुसके अमलके लिअे जो रास्ता अुन्होंने लिया है वह गलत है। दुनियामें समान भाव लानेका काम छिपकर रहनेवाले लोग नहीं कर सकते। सूर्य सबके साथ समान व्यवहार करता है। वह छिपा हुआ नहीं है। श्रीमानके घरमें सूर्यनारायण जितनी सेवा करता है, अुतनी ही सेवा वह गरीबके घरमें भी करता है। आलसी मनुष्य दरवाजे बन्द करता है, तो अुसके घरमें सूरज नहीं जाता। लेकिन जो भी अपना दरवाजा खोलता है, अुसके घरमें वह जाता है। वह कभी छिपता नहीं। जिनको छिपना है, वे अपने घरमें छिपते हैं। तो जो सबमें समान भाव रखते हैं और दुनियाको समान बनाना चाहते हैं, अुनको खुली हवामें आना चाहिये। समान भाव होना चाहिये, यह पोतनाकी अिच्छा थी। अिसीलिअे वह खुली हवामें किसान बन कर लोगोंमें काम करता था और अुसने अपने हाथमें बन्दूक नहीं ली थी, बल्कि हल लिया था। अुसको राजाने कहा कि तुम्हारा ग्रंथ मुझे अर्पण करो, तो वह बोला, 'मेरा ग्रंथ भगवान्को अर्पण है।' मतलब अुसका यह हुआ कि यह मेरा ग्रंथ गरीबोंके लिअे है और श्रीमानोंके लिअे भी है। किसीका खास अधिकार अुस पर नहीं हो सकता। और आप देखते हैं कि तेलगू प्रांतमें घर-घरमें गरीबोंके और श्रीमानोंके घरोंमें पोतना चलता है।

बन्दूक नहीं, हल

"तो मैं कम्युनिस्टोंसे प्रार्थना करूंगा कि अगर तुम सर्वत्र समान भाव चाहते हो, तो बन्दूक छोड़ दो, हल हाथमें ले लो और किसानोंके माफिक काम करना शुरू कर दो। आप लोग जानते हैं कि मैं वर्धामें रहता हूं, यानी वर्धाके नजदीक अेक छोटे गांवमें रहता हूं। वहां पर पढ़े-लिखे लोग मैंने अिकट्ठे किये हैं, और कॉलेजवाले लड़के भी मेरे पास आ पहुंचे हैं। वे हाथमें कुदाली लेते हैं और खेतमें खोदनेका काम करते हैं। अुनमें श्रीमान भी हैं, गरीब भी हैं, लेकिन सबको काम करना पड़ता है। खोदना, चक्की पीसना, रसोअी करना और भंगी-काम सब करना पड़ता है। अिस तरह कम्युनिस्ट आकर काम करेंगे, तो अुनका विचार फैलेगा।"

जाको राखे साअियां

रातको अेक महान् दुर्घटना होते-होते बची। मंडपमें जब लोग भोजनके लिअे बैठे थे, तो विनोबाने सोचा कि सबको देख आयें। रात अंधेरी थी, बत्ती मंडपमें जल रही थी। विनोबाकी झोंपड़ीके पासके कुअेंका जिक्र अूपर आ चुका है। मंडपके लिअे रास्ता कुअेंके पाससे दाहिने हाथ होकर जाता था। कुअेंकी दीवार वगैरा कुछ नहीं थी। लम्बा-चौड़ा भी वह बहुत था। विनोबाजी बिना लालटेन लिये ही झोंपड़ीसे निकले, दाहिनी ओर मुड़नेकी बजाय सीधे चले गये। नित्य निरंतर जाग्रत रहनेवाली हमारी महादेवीबहनके ध्यानमें बात आ गअी। वे सहसा भयभीत हुअीं। लालटेन लेकर दौड़ीं। देखा तो विनोबाजी कुअेंकी तरफ बढ़े जा रहे थे। अब अगला कदम भीतर पड़ने ही वाला था कि महादेवी बहनने जोरोंसे विनोबाका हाथ पकड़कर अुन्हें पीछे घसीटा, तब विनोबाजीके ध्यानमें बात आअी। लेकिन फिर भी मानो कुछ हुआ ही नहीं, अिस तरह दाहिनी ओरसे वे मंडपमें चले गये। आज भी अुस प्रसंगके स्मरणमात्रसे रोम-रोम खड़े हो जाते हैं। प्रभुकी लीला अपार है। 'जाको राखे साअियां....'

बा० मू०

हमारा नया प्रकाशन

उत्तरकी दीवारें

लेखक: काका कालेलकर; अनुवादिका: शकुन्तला

कीमत ०-१४-० डाकखर्च ०-३-०

महादेवभाअीकी डायरी

[तीसरा भाग]

संपा० नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६-०-० डाकखर्च १-१-०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

लेखक : नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६-०-० डाकखर्च १-३-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
१२ जनवरी १९५२

चमार और मोची

हड्डियोंका निर्यात करनेकी सरकारी नीतिसे खेती और गांवोंकी अर्थ-व्यवस्था पर कैसा नुकसानदेह असर पड़ता है, अिसकी छानबीन हम कर चुके हैं। वंशपरंपरासे चमड़ा कमाने और जूते बनानेका धन्धा करनेवाले चमारों और मोचियोंकी हालत भी अुतनी ही दयनीय है। बहुत पुराने जमानेसे सारे देशमें फैली हुअी खास जातियां ही यह काम करती चली आअी हैं। पितासे पुत्रको विरासतमें मिली हुअी नकुछ-सी पूंजी, साधनों, पुराने औजारों और धन्धे सम्बन्धी थोड़े-बहुत ज्ञानके बल पर ही ये जातियां अपना धंधा करती हैं। कमसे कम पिछले तीन सौ बरससे पुरानी पंचायत पद्धतिके दिनोंमें भी न तो भारतीय समाजने और न देशी या विदेशी भारतीय सरकारोंने अिस बातमें कभी दिलचस्पी ली कि अिन जातियोंका धन्धेसे सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान बढ़ाया जाय, अुनकी आर्थिक हालत सुधारी जाय, या अुन्हें चमड़ा कमाने और जूते बनानेकी विशेष सुविधायें और साधन प्रदान किये जायं। आज तक ये जातियां केवल अपने पुराने संस्कारोंके बल-पर ही जिन्दा हैं।

ब्रिटिश सरकार अीस्ट अिंडिया कंपनीका सिर्फ दूसरा नाम ही थी। अुसका अस्तित्व स्पष्ट रूपसे भारतका व्यापारिक और व्यावसायिक शोषण करनेके लिअे ही था। भारतकी व्यवसायी जातियां स्वेच्छासे अुसके दलाल बन गअी थीं। पश्चिमी राष्ट्र शिल्पविज्ञानमें तेजीसे आगे बढ़ रहे थे, और किसी भी धन्धे या अुद्योगको करनेमें अपनी तौहीन नहीं समझते थे। अिसलिअे अपने-अपने देशोंमें अुन्होंने हरअेक धन्धेको शिल्पविज्ञानका लाभ पहुंचाया और हमारे गरीब, अुपेक्षित और साधनहीन कारीगरोंके बनिस्बत ज्यादा अच्छा और ज्यादा सस्ता माल पैदा किया।

भारतीय व्यापारियोंने अर्थशास्त्रका केवल अेक ही अुसूल सीखा है: सस्तेसे सस्ते बाजारमें खरीदो और महंगेसे महंगे बाजारमें बेचो। हमारे यहां ऊंचे और नीचे, पवित्र और अपवित्र धन्धोंके निश्चित किये हुए दर्जे हैं। लेकिन हम स्वदेशी और विदेशीमें कोअी भेद नहीं करते। देशभक्ति और राष्ट्रीयताकी हमारी भावनाका अभी पूरा-पूरा विकास नहीं हो पाया है।

चमड़ा कमाने और जूते बनानेके धन्धोंको भी हम अैसे ही अपवित्र धन्धे मानते आये हैं। और चूंकि धन्धेकी अपवित्रताको हम धन्धा करनेवालों पर थोप देते हैं, अिसलिअे चमार और मोची अितने अशुद्ध और अपवित्र माने जाने लगे कि हमारे जैसे साफ-स्वच्छ लोग अुनके साथ मिलने-जुलनेमें अपनी तौहीन समझने लगे। अिसलिअे जब तक हमारी चमड़ेकी चीजोंकी जरूरतें दुकानोंसे पूरी होती रहीं, तब तक किसीने अिस बातकी चिन्ता नहीं की कि हमारे देशके चमार और मोची जीते हैं या मरते हैं। न हमने अिस बातकी परवाह की कि हमारे जूते युरोपके विदेशी कारखानोंमें बनते हैं या जापानमें। जरूरत पड़ने पर हम कुछ समयके लिअे ब्रिटिश मालके राजनैतिक बहिष्कारका विचार कर सके, लेकिन स्वदेशीका सिद्धान्त हमारी रग-रगमें नहीं समा सका। सचमुच व्यापारमें हम हमेशा आन्तरराष्ट्रीयवादी रहे हैं।

अुन्नीसवीं सदीके आखिरी पचीस बरसोंमें महाराष्ट्रमें प्रबुद्ध और जाग्रत लोगोंका अैसा दल जरूर पैदा हुआ, जिसने आनेवाले खतरेको समझा और देशको स्पष्ट चेतावनी दी। लेकिन अुनकी अिस चेतावनी पर किसीने ध्यान नहीं दिया और यह चीज तब तक जारी रही जब तक गांधीजीने अपनी प्रचण्ड कार्यशक्ति और अद्भुत संगठन-शक्तिसे स्वदेशीके ध्येयको हाथमें नहीं लिया। अुनकी दृष्टिमें अैसे स्वराजका कोअी अर्थ नहीं था, जो हमारे देशी कारीगरोंकी हालत सुधारने और अुनके मृतप्राय धन्धोंमें नअी जान डालनेका काम नहीं करता।

हम मानते हैं कि स्वराज आ गया है। लेकिन क्या वह कोअी सच्चा अर्थ लेकर आया है? क्या अुसने अैसी नीतियोंको गति प्रदान की है, जो हमारे शिक्षा, अुद्योग और शासन सम्बन्धी दृष्टिकोण और तंत्रमें परिवर्तन सूचित करनेवाली हों? हमारे देशमें कुछ लाख चमार और मोची बसते हैं। हालांकि पिछले पचास बरसोंमें जूतों और चमड़ेकी दूसरी चीजोंकी खपत हमारे देशमें शायद हजार गुनी बढ़ी होगी, फिर भी क्या कारण है कि सदियोंसे ये धन्धे करनेवाले चमारों और मोचियोंको ज्यादा काम पानेके बजाय निराधार बनकर सड़कोंकी शरण लेनी पड़ रही है?

१७ सितम्बर, १९५० के 'नागपुर टाअिम्स' में नागपुरके अेक मोचीकी सहीसे नीचेका पत्र छपा है:

"हालमें ही मैंने बम्बअीसे निकलनेवाले गुजराती पत्र 'व्यापार' के ताजे अंकमें जेकोस्लोवाकियाके प्रसिद्ध जूता-अुद्योगपति थामस बाटाका अेक लेख पढ़ा। अपनी सफलताओंका बयान करते हुअे मि० बाटा अिस बातका गर्व करते हैं कि वे अपने देशसे ४,००० मील दूर भारतमें आये, जहां जूते बनानेके अुद्योगमें लाखों करोड़ों रुपये कमानेका बढ़िया मौका मौजूद था। वे कहते हैं कि २० साल पहले वे अपने देशसे १ करोड़ २० लाख जूते-जोड़ मंगाकर भारतमें बेचते थे। फिर बाटाने भारतमें कलकत्ताके नजदीक जूतेका कारखाना खोला। अब अुनका दावा है कि वे हर साल ८ करोड़ जूते-जोड़ तैयार करते हैं, जो भारतके शहरों और कस्बोंमें देखते देखते बिक जाती हैं। अुनके ४३ कारखाने जरूरतसे ज्यादा माल पैदा करते हैं, जिसके कारण हर साल दस-बारह लाख जूते-जोड़ बच रहती हैं। सारे देशमें बाटाकी ८०० से अूपर दुकानें हैं, जिनके जरिये वे अपना जूतोंका व्यापार चलाते हैं। वे भारत सरकारकी खूब तारीफ करते हैं, जो हर तरहसे अुनकी मदद करती है और अुन्हें फलने-फूलनेकी अनेक सुविधायें देती है।

"मुझे अिस बातका आश्चर्य है — जैसा कि देशके लाखों चर्मकारोंको भी होता होगा — कि आजाद भारतकी राष्ट्रीय सरकार देशके चर्मकारोंको, जो बहुत छोटे पैमाने पर चमड़ेका अुद्योग चलाकर अपनी जीविका कमाते हैं, भारी नुकसान पहुंचाकर बाटाके जैसे विदेशी अुद्योगको कैसे सारी सुविधायें दे रही है? दूसरी विरासतोंकी तरह यह भी ब्रिटिश राजकी अेक विरासत है, लेकिन हमारी कांग्रेस सरकारको भारत-माताके पुत्र गरीब चर्मकारोंको भारी नुकसान पहुंचाकर बाटा जैसे विदेशी पूंजीपतियोंको भारतीय बाजारका शोषण करनेका मौका हरगिज नहीं देना चाहिये था। मेरे अिस कथनमें थोड़ी भी अतिशयोक्ति नहीं है कि बाटा हरसाल कुछ हजार हिन्दुस्तानियोंकी मदद और मशीनोंकी प्रचंड अुत्पादन शक्तिके बल पर नवजात भारतीय प्रजासत्ताक राज्यकी जनतासे करोड़ों रुपये लूट रहा है। बाटा जैसे विदेशियोंको आश्रय देते रहनेसे भारतीय चर्म-गृहअुद्योगकी कैसी दयनीय हालत हो जायगी, अिस पर भी हमारी सरकारने कभी विचार किया है? चर्मकार जाति युगोंसे पद-दलित होती चली आ रही अेक हरिजन जाति है, जिसने भयंकर कष्ट सहे हैं। फिर भी

www.vinoba.in

वह हमेशा गृहउद्योगके छोटे पैमाने पर चमड़ेकी चीजें बनाकर अपने देशवासियोंकी सेवा करती रही है। अिस तरह विदेशी पूंजी भारतके चर्म-उद्योगके साथ जो घोर अन्याय कर रही है, अुस तरफ हमारी सरकार क्या ध्यान देगी ? — पी० रामस्वामी।"

अिस भाअीने नागपुरके नेताओंके पास पहुंचकर अुनसे अपना मामला हाथमें लेनेकी विनती की। लेकिन चमार और मोची जैसी नीची जातिका पक्ष भला कौन लेने लगा? अिसके अलावा, हमारे विद्वान नेताओंने दूसरे देशोंका आर्थिक अितिहास पढ़ा है और वे अिस चीजको पूरी तरह समझ चुके हैं कि किसी देशमें औद्योगिक क्रांति करने और अुसका औद्योगिक विकास साधनेके लिअे छोटे-छोटे देशी अुद्योग-धन्धोंका बलिदान और अुन धन्धोंमें लगे हुअे कारीगरोंकी बेकारी अनिवार्य हो जाती है। यह अज्ञान मोची भला यह बात कैसे जाने? अिसलिअे अिस आदमीसे दलील करना या अिसकी हालतको देखकर दुखी होना बेकार था। अिस तरहके छोटे-छोटे धन्धोंको जिन्दा रहनेका कोअी हक नहीं, अुन्हें मिट ही जाना चाहिये; और अिस सत्यको यह आदमी और अिसके साथी जितनी जल्दी समझ लें, अुतना ही अुनके लिअे अच्छा होगा।

लगभग अशिक्षित-सा यह आदमी अितने बड़े विद्वानोंको भला क्या जवाब दे? लेकिन वह और अुसकी जाति अभी मरनेके लिअे तैयार नहीं है। वे जीने और फलने-फूलनेकी सुविधायें चाहते हैं। वह भाअी मेरे पास पिछले नवम्बरमें और फिर दिसम्बरमें सलाह लेने आया था।

अैसी औद्योगिक क्रांति सचमुच झूठी और भ्रमपूर्ण कही जायगी, जो पहलेसे मान लिये गये आशीर्वादोंकी कीमतके रूपमें छोटे पैमानेके देशी अुद्योग-धन्धोंमें लगे हुअे बहुत बड़े जनसमुदायको जबरन धीरे-धीरे मार डालना चाहती है।

जापान अपने औद्योगिक विकासमें युरोपके देशोंसे पीछे नहीं रहा। लेकिन अैसा नहीं मालूम होता कि अिस कारण अुसने अपने देशी गृह-अुद्योगोंको कोअी नुकसान पहुंचाया हो। बेशक, श्री सहस्र-बुद्धे, श्री प्राणलाल कापड़िया और श्री कुमारप्पा सभी हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि जनताकी प्रतिदिनकी जरूरतें पूरी करनेके लिअे जापान ग्रामोद्योगों और विकेंद्रित अुद्योगोंका पक्का हिमायती है। और अुसने हाथ-कौशल और दूसरी अिन्द्रियोंके कौशलको बढ़ानेके साथ-साथ वैज्ञानिक तरीकोंसे काम लेनेमें कितनी बड़ी तरक्की की है? लेकिन हमारी तरह अुसने अपनी मानव-शक्तिकी क्रूर अुपेक्षा नहीं की।

अिसके लिअे सिर्फ सरकारको ही दोष नहीं दिया जा सकता, यद्यपि अिस बातके लिअे वह काफी दोषकी पात्र है कि जनताके सबसे ज्यादा आगे बढ़े हुअे वर्गोंमें से चुने गये लोगोंकी बनी होने पर भी अुसके मंत्री जनताका सही नेतृत्व नहीं कर सके। फिर भी, काफी बड़ा दोष खुद लोगोंका और अुनके धार्मिक, सामाजिक और स्थानीय मार्गदर्शकों और नियंत्रण कर्ताओंका है। अुन्होंने हमारे देशी कारीगरोंकी सिर्फ अुपेक्षा ही नहीं की है, बल्कि अुन्हें जानवरसे भी हलका समझकर सक्रिय रूपमें अुनके सर्वनाशको बढ़ाया है। धर्मकी विकृत दृष्टिकी बुनियाद पर खड़ी हमारी समाज-रचना हमारे औद्योगिक, आर्थिक और राजनैतिक पतनका तथा अिन नीची समझी जानेवाली कारीगर जातियों द्वारा बड़े पैमाने पर अिस्लाम और अीसाअी धर्म स्वीकार किये जानेका अेकमात्र कारण न हो, तो भी मुख्य कारणोंमें से अेक कारण जरूर है। मिले हुअे स्वराजको आशीर्वादरूप बनानेके लिअे अेक तरफ हमें अपने परंपरागत सामाजिक ढांचेको बदलकर अुसे नया रूप देना होगा और दूसरी तरफ अर्थशास्त्र और विज्ञानके नाम पर प्रचलित अन्धविश्वासोंको छोड़ना होगा। जब तक हम अैसा नहीं करते, तब तक हमारे राजनीतिज्ञ, अर्थशास्त्री और व्यवसायी लोग भी अुस नुकसानकी नहीं समझेंगे, जो अुन्होंने हमारे देशको पहुंचाया है और आज भी पहुंचाने पर तुले बैठे दिखाअी देते हैं।

बम्बअी, १-१-'५२ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

३० जनवरी

हर सालके मुताबिक अिस वर्ष भी देशके लोग ३० जनवरीका दिन मनावेंगे ही। भारतकी आजकी मनोदशाको देखते हुअे चुनावके तूफानके बीच या अंतमें ३० जनवरीका महत्त्व लोगोंकी नजरोंमें बहुत ज्यादा है अैसा नहीं दीखता। अैसा क्यों? बापू भारतीय आजादीके लिअे और अुसी आजादीके खतरेका मुकाबला करते हुअे मरे। फिर भी यह अुदासीनता क्यों? क्या आजके अैतिहासिक युगमें भी भारतीय पुराणकी पुनरावृत्ति हो रही है? 'समुद्र-मंथन' का 'हलाहल' पीकर बापू गये। पर आजादीका अधिकाररूपी 'अमृत' बांटनेमें क्या देशके बड़े-बड़े देवता आपसमें लड़ मरेंगे? क्या वे अिस 'बंटवारे' के शोकमें बापूको भी भूल जायंगे? शिवके हलाहल पी लेनेके बाद देवतागण शिवको भले ही भूल जायं, लेकिन अुसके 'गण' अुसे कैसे भूल सकते हैं? अुसी तरह भारतके नेता भले ही बापूको भूल जायं, लेकिन क्या अुनके 'गण'— देशकी करोड़ों जनता — अुन्हें भूलेगी? अगर नहीं भूलना है, तो ३० जनवरीका दिन अदम्य अुत्साहसे मनाया जाय। बापूके शरीरको नहीं, पर अुनकी आत्माको याद करना होगा, जिसने युग-समस्याके समाधानके लिअे क्रांतिकारी संदेश दिया है।

आजका युग आर्थिक केंद्रीकरण तथा पूंजीवादी व्यवस्थाके कारण जर्जरित हो रहा है। अिस केंद्रित व्यवस्थाको तोड़कर अुसे घर-घर बांट कर विकेंद्रित कर देनेका कार्य करना है। यह क्रांतिकारी कार्य वे नहीं करेंगे, जिनके हाथमें शक्ति और संपत्ति केंद्रित है। बल्कि यह तो अुस जनता द्वारा ही हो सकता है, जिसके हाथमें यह शक्ति और संपत्ति अंततोगत्वा विकेंद्रित होकर पहुंचेगी।

आज संपत्ति दो दिशाओंमें केंद्रित है: १. औद्योगिक प्रथा; और २. जमींदारी प्रथा।

गांधीजीने अपने जीवनकालमें पूंजीवादी औद्योगीकरणको विघटित करनेका तरीका बताया। अिस विघटनका प्रतीक अुन्होंने हमें चरखा दिया और विकेंद्रीकरणका मार्ग हमारे लिअे प्रशस्त कर दिया। लेकिन जमीन विकेंद्रित होकर लोगोंके हाथोंमें आ जाय, अिसकी सक्रिय योजना बतानेके पहले ही अुनका निर्वाण हो गया। अिसलिअे बापूका यह अधूरा काम आज पूरा करनेमें पू० विनोबा जुट गये हैं। जमीनके बंटवारेका अहिंसक तरीका अुन्होंने अपने मुल्क तथा दुनियाके सामने अुपस्थित किया है।

भारतने गांधीजीके बताये अहिंसक मार्गसे अेक महान् राजनीतिक क्रांति करके राजनीतिक समस्याको हल किया। पर अब क्या भारतीय जनता सामाजिक समस्याअें हल करनेके लिअे अिस अहिंसक तरीकेको अपनानेमें पीछे रहेगी? वास्तवमें भारतकी अंतर्निहित आत्मा अिस अहिंसाके मंत्रको भलीभांति जानती है, और मुझे तो विश्वास है कि वह अिसे जरूर अपनायेगी।

इस महान् सामाजिक क्रांतिका यज्ञ तो शुरू हो गया है। यज्ञके पुरोहित विनोबा मंत्रोच्चारण करने लग गये हैं। अब प्रश्न यह है कि यज्ञमें आहुति देकर हविर्भाग किसे मिले?

मुझे आशा ही नहीं वरन् विश्वास है कि अिस पावन दिवसके अवसर पर कार्यकर्तागण भूदानका अुत्साहपूर्वक प्रचार करेंगे और भूस्वामी अिस यज्ञमें अधिकसे अधिक आहुति देकर सारे देशमें अेक धुनसे कार्य करेंगे।

सेवाग्राम (वर्धा), धीरेन्द्र मजूमदार
१-१-'५२ अध्यक्ष, अ० भा० चरखा संघ

www.vinoba.in

विनोबाकी उत्तर भारतकी यात्रा — १०

जौरासीसे तेरह मील चलकर मध्यभारतकी राजधानी ग्वालियरमें विनोबाजी सबेरे करीब ७-३० बजे पहुंचे। अब तक सारे रास्तेके दोनों तरफ जो हरीभरी फसलोंके रूपमें लक्ष्मीका दर्शन मिल रहा था, अुसके बजाय अब दोनों तरफ हजारों अेकड़ अूसर भूमि पड़ी हुअी दिखाअी देने लगी। बहुत दुःख हुआ। मध्यभारत सरकारने गरीबोंको जमीन बांटनेका तय तो किया है, परंतु जहां दो आदमी मांगनेवाले होते हैं, वहां अुस जमीनका नीलाम करनेकी आज्ञा है। लिहाजा जमीन वही खरीद सकता है, जो नीलाममें सबसे अूंची बोली बोल सकता है। यानी अिस तरीकेसे गरीब भूमिहीनोंको जमीन मिलनेका सवाल ही नहीं अुठता। फिर भी गरीबोंमें कुछ जमीन बांटी गयी है, अैसा अधिकारियोंसे मालूम हुआ। सरकारने अपनी ओरसे बड़े व्यापारियोंको सैकड़ों अेकड़ जमीन अिस खयालसे दे रखी है कि जल्द अुठ सके। किसी किसीको रुपया भी काफी दिया गया है। 'अधिक अन्न अुपजाओ' योजनाके मातहत वह समर्थोंको मिला है। अनुभवसे पाया गया कि जमीन-वितरणका काम भूदान-समिति जैसी गैरसरकारी मशीनरी द्वारा ही अच्छा हो सकता है। हैदराबादमें भूदान-समितिकी तरफसे जमीन तकसीम करनेका जो काम चल रहा है, अुसी तरह सब तरफ होना चाहिये, अैसा अब लोग मानने लगे हैं। क्योंकि अुसमें गांव-गांव जाकर भूमिहीनोंकी खोज करनी पड़ती है, जिसके लिअे सेवावृत्तिकी आवश्यकता होती है।

ग्वालियर (लश्कर) पहुंचते-पहुंचते रास्तेमें सैकड़ोंकी भीड़ जमा हो गअी। कैमरावालोंने तो सारे रास्ते कैमरे चलाये।

निवास पर पहुंचकर विनोबाजी अकसर छोटासा प्रास्ताविक भाषण देते हैं। आज यह साररूप भाषण भी कुछ विस्तार-रूप और महत्त्वका हुआ: "जो बड़ी भारी समस्या हिन्दुस्तान और दुनियाके सामने अुपस्थित है, अुसका कोअी अहिंसक हल मिल सके, तो अुसकी तलाशमें मैं गांव-गांव घूम रहा हूं। मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि या तो हिन्दुस्तान अहिंसाके रास्ते चले या हिंसाके रास्ते जानेका विचार हो, तो हिंसाको विकसित करे। ये दो ही रास्ते रह गये हैं। अिसलिअे सोच-विचारकर काम करे। अगर हिंसाके रास्ते जाना हो, तो शस्त्रास्त्रोंके लिअे करोड़ों रुपये खर्च करने होंगे। लोगोंकी सेवाका काम कमसे कम पचास साल तक मुल्तवी रखना होगा। गरीब लोगोंकी आवाज पांच-पचास साल तक दबा देनी होगी। अुन्हें कहना होगा कि आप लोगोंको देशके लिअे बलिदान करना है। और जब आप सब भूखसे मर ही रहे हैं, तो अुसे ही यज्ञ समझिये। पर अितनेसे काम समाप्त नहीं होगा। रशिया या अमेरिकाको गुरु बनाना होगा। अुनके चेले बनकर रहना होगा। और फिर पांच-पचास सालके बाद तो क्या, सौ दो सौ सालके बाद भी हिन्दुस्तानका सितारा कभी चमके तो चमके। और फिर दुनियाका खात्मा हुअे बिना कैसे रहेगा? कारण अितना बड़ा देश बलवानतम बने और अुसके साथ दूसरे देश भी पनपें, यह असंभव है।

"लेकिन हम तो अिस भूमि पर वैकुंठ लाना चाहते हैं। हम हमारे यहांके गरीबोंका बलिदान नहीं होने देना चाहते। बलिदान यानी बलवानोंका दान होना चाहिये। लेकिन यहां तो गरीबोंका दान हो रहा है। अिसलिअे मैं अिस सबका अहिंसक हल ढूंढनेका प्रयत्न कर रहा था कि सोचते-सोचते तेलंगानामें मुझे अिसका रास्ता सूझ गया। मैंने देखा कि 'आत्मौपम्य'के तरीकेसे ही अिस समस्याका हल निकल सकता है। यही आर्य तरीका है। हिंसाका तरीका तो अनार्य तरीका है।"

विनोबाने विस्तारपूर्वक बताया कि वे जमीन किन-किनसे मांगते हैं: "छोटे काश्तकार, बड़े काश्तकार, जमींदार और धनवान अिन सबसे मैं जमीन मांगता हूं। गरीब और छोटे काश्तकारसे अिसलिअे कि गरीब ही गरीबका दुःख पहचान सकता है। बड़े काश्तकारोंसे मेरा कहना है कि परमेश्वर आपकी कसौटी करना चाहता है। वह देखना चाहता है कि आप अपनी संपत्तिका अुपयोग लोक-सेवामें करते हैं या विषय-भोगमें। मुझे अपने परिवारका अेक सदस्य समझो और मेरा हक मुझे दो। दरिद्रनारायणकी ओरसे मैं दान नहीं मांग रहा हूं, अपना हक मांग रहा हूं। संभव है आपने मुझे चीन्हा न हो, पहचाना न हो, तो मेरे चेहरेको निहारो। कुछ जमाना हुआ कि मैं आप लोगोंसे, मेरे घरवालोंसे, बिछुड़ गया था। लेकिन अब तो आप पहचान सकेंगे, अैसी मैं आशा करता हूं। अगर आज भी मेरी पहचान आपको नहीं होगी, तो मुझे दूसरे घर जाना होगा...।" कितना गंभीर अिशारा था।

फिर भी जमींदारोंको अुद्देश करके कहा: "आपसे मैं दोहरा दान मांगता हूं। आपका भूमि संबंधी स्वामित्व सरकारने भी मान्य किया है। मैं भी अिससे अिनकार नहीं करना चाहता। लेकिन मैं तो आपका स्वामित्व-निरसन करना चाहता हूं। गीतामें 'स्वामित्व' शब्दका प्रयोग असुरोंके लिअे आया है। देवोंके लिअे सेवा शब्दका प्रयोग किया गया है। मेरे प्यारे भाअियो, आप स्वामित्व छोड़ें, तो दस गुना स्वामित्व पायेंगे। आज आपको स्वामित्वके कारण दरवाजे बंद करके रहना पड़ता है या गांव छोड़कर भागना पड़ता है। कल स्वामित्व-निरसनके बाद मेरी तरह खुले आम, जैसे बादशाह विचरता है, आप विचर सकेंगे।"

और फिर धनवानोंसे कहा:

"मुझे आपका पैसा नहीं चाहिये। आपका पैसा लेकर न मुझे गरीबोंको दीन बनाना है, न आपको अभिमानी। अगर आपके पास पैसा है, तो पैसेसे जमीन खरीदिये, और मुझे जमीन दीजिये।"

और फिर अंतमें अपने कार्यकी व्यापकताको बताया: "अिस तरह आप जितने भी हैं, मुझसे संबंध टाल नहीं सकते। या तो आप जमीन देनेवाले बनते हैं या लेनेवाले। किसी न किसी रूपमें मेरे कार्यके साथ आपका संबंध आना ही चाहिये।"

दो दिनसे ग्वालियरमें जागीरदारोंका संमेलन चल रहा था। जमींदारी प्रथाका अंत लानेकी नीतिके अनुरूप यहांकी सरकारने जागीरदारी प्रथाको समाप्त करनेवाला बिल भी धारासभामें पेश किया था। जागीरदार लोग अिसलिअे कांग्रेसवालोंसे अत्यधिक नाराज थे। वे विनोबाको कांग्रेससे अलग नहीं समझते थे, और अिसलिअे भूदान-यज्ञसे अुन्होंने संपूर्ण असहयोग कर रखा था। विनोबाजीसे वे लोग मिलना भी नहीं चाहते थे। लेकिन सबको नारायण-स्वरूप माननेवाले और नारदकी तरह सबके यहां पहुंचनेवाले विनोबाको मानापमान या शत्रु-मित्र भाव थोड़े ही छू सकता था? अुन्होंने जागीरदारोंके पास संदेश भेजा कि, "मैं आप लोगोंसे मिलना चाहता हूं। कहां मिल सकता हूं?" प्रेम आक्रमक बनकर आया था। अुसका प्रतिकार असंभव हो गया। दो बजे सरदार आंग्रेके निवासस्थान पर मुख्य-मुख्य जागीरदार लोगोंके साथ करीब अेक घंटा बातचीत हुअी।

विनोबाने शुरूमें ही कहा: "आप मुझे जानते नहीं। १९२५से १९५१ तक आज पचीस वर्ष हो गये, मैं कांग्रेसका प्राथमिक सदस्य भी नहीं हूं। न मैं आज तक कांग्रेसके किसी अधिवेशनमें ही शरीक हुआ हूं। गांधीजीकी संस्थाओंके साथ भी मेरा कोअी वैधानिक संबंध नहीं है। जितना आजाद मैं हूं, अुतना दुनियामें शायद ही कोअी हो। करीमनगरमें सोशलिस्टोंने मेरा काम किया। चांदा जिलेमें तो हिन्दू महासभावालोंके यहीं ठहरा। अिस तरह सभी लोग मेरे काममें सहयोग देते हैं, क्योंकि मैं किसी पक्षका नहीं हूं।

www.vinoba.in

परंतु हमें परिस्थितिका खयाल करते हुअे काम करना चाहिये। मैंने कअी सभाओंमें कहा है कि जिनके पास जमीन है, वह सारी अुन्होंने अन्यायसे ही कमाअी है अैसी बात नहीं है। अुन्होंने परिश्रम द्वारा या अुद्योग द्वारा भी कमाअी होगी। परंतु भूमि सबकी माता है। और हवा, पानी तथा सूरजकी तरह सबका भूमि पर समान अधिकार है। वेदोंकी भी राय है कि 'माता भूमिः पृथिव्याः'। वेदोंसे लेकर आज तककी सारी संस्कृतिका अभ्यास करनेका मौका मुझे मिला है। समान भूमिका मेरा आग्रह नहीं है। परंतु करोड़ों लोग भूमिहीन रहें, यह कैसे संभव हो सकता है? कांग्रेस, सोशलिस्ट पार्टी, आदि पार्टियोंकी दृष्टिसे आप न सोचें। स्वतंत्र रूपसे पक्ष-निरपेक्ष विचार करें। मेरी तेलंगानाकी यात्राके समय कम्युनिस्टोंने अेक पर्चा भी निकाला था कि विनोबा तो जमींदारोंको वापस गांवोंमें लाकर बसा रहे हैं। अिनको कोअी भी मदद न करें। डांगे मुझसे मिलने आनेवाले थे। आते तो मैं अुनसे पूछता। अिसमें शक नहीं कि मैं श्रीमानोंका मित्र हूं। परंतु मैं गरीबोंका दुश्मन भी नहीं हूं।

"दूसरी तरफ श्रीमानों और जमींदारोंकी ओरसे मुझ पर आक्षेप लगाया जाता था कि आप हवा, पानी और रोशनीकी तरह जमीन सबकी होनेकी बात करते हैं, तो अिससे अराजकवाद फैल जायगा।

"तो अिस तरह जहां दोनों तरफसे आक्षेप किये जाते हैं, वहां मैं समझता हूं कि मेरा रास्ता ठीक है। आक्षेप सत्य होगा, तो सत्य प्रकाशमें आये बिना नहीं रहेगा।"

विनोबाकी भारती धाराकी तरह बहती ही जा रही थी। अंतमें अुन्होंने कहा: "मैं तो सबके प्रेमका भूखा हूं। चाहता हूं कि सबमें जो नारायण है, अुसके दर्शन करूं। मेरे लिअे, 'नर नारी बाळें अवघे नारायण' हैं। नारद जिस वृत्तिसे हर किसीके पास पहुंच जाते थे, वैसे मैं भी पहुंच जाता हूं। मेरे लिअे तो सब अंतरात्माके और परमेश्वरके ही रूप हैं। अुनमें से हरअेकमें गुण हैं। अुन गुणोंके जरिये मैं सबके अंतःकरणमें प्रवेश पानेकी कोशिश करता हूं। यदि मेरी आवाज सच है, तो वह हर घरमें जावेगी। हर हृदयमें पहुंचेगी।"

स्वामित्व-निरसनकी प्रेरणा देते हुअे कहा:

"भूमिके स्वामित्वका खयाल अत्यंत खतरनाक है। 'अीश्वरोहम्, अहम् भोगी सिद्धोहम् बलवान् सुखी' — मैं अीश्वर हूं, मैं स्वामी हूं — यह वाक्य तो गीताने असुरोंके मुखमें डाला है। परमेश्वरी देनोंके बारेमें मनुष्य अपनेको स्वामी समझे, यह कैसे हो सकता है? क्या मैं हवाका स्वामी हो सकता हूं? क्या मैं पानीका स्वामी हो सकता हूं? क्या मैं सूर्य-प्रकाशका स्वामी हो सकता हूं? तो फिर मैं भूमि माताका स्वामी कैसे बन सकता हूं? यह तो परमेश्वरी योजनाका विरोध होगा और परमेश्वरी योजनाका विरोध करके कौन अिस दुनियामें रह सकता है?

"मेरा काम तो सिर्फ आपको विचार प्रदान करनेका है। 'शहाणे करून सोडावे अवघे जन'। मैं तो आजकल लोगोंको अपनी विचार-प्रणालियोंमें बांधे जाता हूं। मैं तो विचार देकर मुक्त कर देना चाहता हूं। वह विचार फिर आपको सतावेगा। वह सारा रणक्षेत्र, सारा कुरुक्षेत्र आपके हृदयमें शुरू होगा।"

जागीरदारोंकी शंकाओंके बादल दूर हो गये। विनोबाकी वाणीमें दरिद्रनारायणकी पीड़ा प्रगट हो रही थी। हिंसाको टालनेकी और सद्भावनाके आवाहनकी अुनकी अुत्कटता जागीरदारोंको छूअे बिना नहीं रह सकती थी। अुन्होंने महसूस किया कि कत्ल, कानून और करुणा तीनों मार्गोंमें से यह करुणाका रास्ता ही, जिसे विनोबाने चलाया, देशके लिअे और अुनके लिअे भी अनुकूल है। हिंसा अिसीसे टल सकती है। अिसलिअे जागीरदारोंने कहा "हमें यकीन हो गया कि आप हमारे भी मित्र हैं। हम राजपूत हैं और राजपूतोंका धर्म ही है कि भूदान करें। यद्यपि सरकारने हमारे पास अब विशेष कुछ रखा नहीं है, तथापि हम आपको यकीन दिलाते हैं कि हम सब मिलकर विचार करेंगे और हमसे जो भी बनेगा आपके अिस भूदान-यज्ञमें अवश्य हाथ बटावेंगे।"

विनोबाके सामने जागीरदारोंसे जमीन प्राप्त करनेका सवाल नहीं था। अुनको अपना विचार तो मालूम होना ही चाहिये। आत्मौपम्य और अहिंसा दोनों दृष्टियोंसे यह आवश्यक था। अगर जागीरदारोंको विचार जंच जाता है, तो फिर जमीन तो विचार-परिवर्तनका प्रतीक मात्र है। अगर जागीरदारोंसे बात किये बिना विनोबा चले जाते, तो अुतनी कमी ही रह जाती। परंतु जिसने विनोबाको अितने महान कामकी प्रेरणा दी, वह अुस कार्यकी पूर्तिमें अैसी कमी कैसे रहने देता?

जागीरदारोंके यहांसे करीब पांच बजे लौटे। पूनाके महर्षि श्री अण्णासाहब कर्वे विनोबाजीसे मिलनेकी प्रतीक्षामें बैठे थे। अुनके साथ स्व० श्री नरसिंह चिंतामण केलकरकी पुत्री भी थी। विनोबा-वाङ्मयकी वह भक्त थी। गीता-प्रवचनके प्रति खास आकर्षण था।

अण्णासाहबके साथ अुनके समता संघके बारेमें चर्चा हुअी। ९४ वर्षकी वृद्धावस्थामें भी यह दधीचि अपनी हड्डियोंको समाज-सेवामें होम रहा है। अुनकी आंखोंमें तेज है, चेहरे पर समाधान है। दो तपस्वियोंकी मुलाकातको सब बड़ी श्रद्धापूर्वक निहार रहे थे। थोड़ी देर बाद दोनों ही प्रार्थनाके लिअे अुठे।

ग्वालियरकी यह सभा अभूतपूर्व थी। हजारों नर-नारी अुपस्थित थे। विनोबा करीब डेढ़ घंटा बोले। अत्यंत शांतिसे लोगोंने सुना। स्वराज्यके बाद भारतकी जिम्मेदारीका भान विनोबाने नागरिकोंको कराया। दुनिया अब आशाकी निगाहोंसे भारतकी ओर देख रही है। भारतकी ओरसे दुनियाको जो विशेष देन मिलनी है, वह अपने मसले अहिंसक ढंगसे सुलझानेकी है। अिस बातको अनेक दृष्टांत देकर विस्तारसे समझाया। यहां खेतीकी खोज हुअी, गाय और बैलोंकी कितनी अिज्जत हुअी, भूमिका कैसा आदर रहा, अन्नको कितना महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया, आत्म-दर्शनकी पहली सीढ़ी, 'अधिक अन्न अुपजाओ' आदि बातें अैतिहासिक भूमिका सहित किन्तु नूतन परिभाषामें समझाअीं। और अंतमें भूदानका महत्त्व बताते हुअे कहा: "मैं आपके पास भिक्षा नहीं मांग रहा हूं। मैं आपको दीक्षा दे रहा हूं। दीक्षा यह कि मैं आपका स्वामित्व-निरसन कराना चाहता हूं। 'मैं अीश्वर, मैं मालिक, मैं स्वामी' यह भाषा ही गलत है। जब यह स्वामित्व-भावना चली जायगी और जो मांगेगा या चाहेगा अुसे भूमि मिल सकेगी, तब रामराज्य कायम हुआ कहा जा सकेगा। अिसीको ग्राम-राज्य कहते हैं। अिसीको प्रेम-राज्य कहते हैं। अिसीको सर्वराज्य या स्वराज्य भी कहते हैं। मैं अिसीको सर्वोदय कहता हूं।" फिर सबका आवाहन करते हुअे कहा: "मेरा आपको निमंत्रण है कि आप मेरे साथ आअिये। यह क्रांतिका काम कीजिये। हम विचारोंमें क्रांति लाना चाहते हैं। हम साधनोंमें क्रांति लाना चाहते हैं। ऋषिका वाक्य है कि नौजवानोंको नये ब्रह्ममें रुचि होती है। तो मैंने आपके लिअे यह नया ब्रह्म पैदा किया है। मेरा शरीर जर्जर हो गया है, मेरी अुम्र भी हो गअी है, मुझे हिन्दी भाषाका भी ठीक ज्ञान नहीं है। परंतु मैं देख रहा हूं कि भगवान मुझे घोड़ेकी तरह दौड़ा रहा है, मेरी वाणीसे सरस्वतीकी प्रतिभा प्रगट करा रहा है। यह सब कैसे संभव हो रहा है? क्योंकि जो काम भगवान मुझसे करवाना चाहता है, अुसमें मेरा पूरा विश्वास है। और मैं अुस संबंधमें लोगोंको अत्यंत नम्र भावसे और अत्यंत प्रेमभावसे

www.vinoba.in

समझाता हूं। मैं समझा-समझाकर ही काम लेना चाहता हूं। क्योंकि मेरा विश्वास है कि जो काम प्रेमसे और अहिंसक तरीकेसे होगा, अुसीके जरिये क्रांति हो सकती है। दंडसे क्रांति नहीं होगी। अुससे अेक रोग जाकर नये रोगके बीज दाखिल होंगे।"

व्याख्यानके बाद दो व्यापारी सज्जन आये और पांच-पांच सौ रुपया देने लगे। जमीनके लिअे विनोबा रुपया तो लेते नहीं। अिन मित्रोंकी अपनी जमीन भी राजस्थानमें थी। परंतु वह काबिल कास्त न होनेसे अुन्होंने नअी जमीन ही खरीदकर देना ठीक समझा। अेक बहन आयी और अपनी सारी जमीनका दान-पत्र लिख गयी।

बा० मूं०

टिप्पणियां

'सेक्युलर स्टेट'

अिस शब्दके लिअे पाठकों द्वारा कअी अेक शब्द सुझाये गये हैं। जैसे कि सर्वधर्म समभावी, सर्वधर्मी, सद्धर्मी, सार्वधर्म आदि। किसीने व्यापकधर्मी मान्य रखा है। अधिकृत रीतिसे कौनसा शब्द प्रचलित किया जाय, यह तो सरकार ही ठहरा सकती है। सरकारका अुचित खाता अिन सूचनाओंके बारेमें सोच।

बम्बअी, ३१-१२-'५१ कि० घ० म०

सर्वोदय पक्षके कार्यक्रमके बारेमें विनति

दिसंबर १९५१ के 'सर्वोदय' (ता० १५-१२-'५१ के 'हरिजन-सेवक') में चरखा संघके अध्यक्ष श्री धीरेन्द्र मजूमदारने ३० जनवरीसे १२ फरवरी तकके सर्वोदय पक्षको रचनात्मक कार्यकर्ता और जनता किस तरह मनावें, अिस बारेमें तफसीलवार कार्यक्रम सुझाया है। सर्वोदय समाजके सब सेवकोंसे मेरी प्रार्थना है कि वे अपने-अपने क्षेत्रमें यह कार्यक्रम पूरे तौरसे यशस्वी करनेका प्रयत्न करें।

शंकरराव देव
मंत्री, सर्वोदय-समाज

"भूदान-यज्ञ-आन्दोलन"

"विनोबाजीका भूदान-यज्ञ-आन्दोलन" नामसे यह यज्ञ "कैसे शुरू हुआ, अुसका स्वरूप क्या है, अुसकी जरूरत और महत्त्व कितना है, आदि बातोंकी अधिकृत और संकलित जानकारी" देनेके अुद्देश्यसे यह पुस्तिका प्रकाशित की गअी है। अिसका मजमून अधिकांश 'हरिजनसेवक', 'सर्वोदय' आदिमें छप चुका है। परन्तु जिन्हें वह पढ़नेका मौका न मिला हो, अुनके लिअे यह संकलित पुस्तिका अुपयुक्त साबित होगी। प्राप्ति स्थान — सर्व-सेवा-संघ, वर्धा। मूल्य डाकखर्चके साथ रु० ०-२-९।

कि० घ० म०

शूर क्लर्क

आजकी सारी आबोहवा स्वार्थसे गंदी हो गयी है। साधारण आदमियत भी नाममात्रकी रही है। फिर भी यह हर्षकी बात है कि जब कोअी वीरतापूर्ण घटना होती है, तो लोग अुससे काफी प्रभावित होते हैं।

गत मास (नवम्बर) के पहले सप्ताहमें कोलम्बोमें रामनायके नामके अेक क्लर्कने चलती रेलमें चढ़नेकी कोशिश करती हुअी अेक युवतीको बचानेकी कोशिश की। युवती तो बच गयी, लेकिन वे स्वयं रेलके नीचे आकर मर गये। अुनके आठ बच्चे और अेक स्त्री है।

अिस वीर मृत्युसे लोगोंमें अेकाअेक अुस शहीदके प्रति, सद्-भावनाकी लहर दौड़ गई। वहांके अेक पत्रने अुनके कुटुंबकी मददके लिअे अेक निधि खोली। अुसमें पांच सप्ताहमें ही १ लाख रुपये जमा हो गये। अेक डॉक्टरने तो पत्र द्वारा जमा किये हुअे हर १००० रुपये पर १०० रुपये देनेका वचन दिया। यह वचन अुन्होंने बराबर पाला। अिसी प्रकार कुछ रकम चन्द धनिकोंसे मिली। लेकिन ज्यादातर मदद क्लर्क, मजदूर, शिक्षक और विद्यार्थी वर्गसे मिली।

रामनायकेने अपनी वीर मृत्युसे अपना नाम अुज्ज्वल कर दिया। लेकिन जो भरसक मदद गरीब जनताने अुनके कुटुंबको दी, वह अुसके बाद दूसरे नम्बरकी ही अुज्ज्वलता मानी जायगी।

(२८-१२-'५१ के 'टाअिम्स ऑफ अिंडिया' से)

तीन सालका ग्रामसेवा अभ्यासक्रम

ता० ५-१-'५२ के 'हरिजनसेवक' में पृष्ठ ३९२ पर छपे 'सर्व-सेवा-संघ' लेखमें जानकारी (५) के बाद यह पढ़िये :—

(६) अभ्यासक्रम तीन सालका है। शिक्षार्थी तालीमी संघ, चरखा संघ, ग्रामोद्योग विभाग और कृषि-गोसेवा-विभागमें आम तौरसे ९-९ महीने अुस अुस विषयकी शिक्षा पायेंगे। मोटे तौरसे अभ्यासक्रमका स्वरूप यह है:

तालीमी संघ — नअी तालीम।

चरखा संघ — कपाससे कपड़े तक।

ग्रामोद्योग विभाग — घानी, कागज या कुम्हार-काममें से कोअी अेक मुख्य अुद्योग ४ महीने तक। और मधुमक्खी-पालन, ताड़गुड़, चक्की-मगनचूल्हा, साबुन-मगनदीप और घानी चलाना, अिन छोटे अुद्योगोंमें से हरअेकके लिअे अेक-अेक महीनेके हिसाबसे ५ महीने।

कृषि-गोसेवा-विभाग — कृषि-गोसेवा।

शंकरराव देव

अेक धर्मयुद्ध

लेखक : महादेव देसाअी
अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०-१३-० डाकखर्च ०-३-०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : किशोरलाल मशरूवाला
अनु० सोमेश्वर पुरोहित

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-४-०

बापूके पत्र मीराके नाम

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ४-०-० डाकखर्च ०-१३-०

नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद-९

विषय-सूची

		पृष्ठ
विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा : १२-१३	दा० मूं०	३९३
चमार और मोची	कि० घ० मशरूवाला	३९६
३० जनवरी	धीरेन्द्र मजूमदार	३९७
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा — १०	दा० मूं०	३९८
टिप्पणियां :		
'सेक्युलर स्टेट'	कि० घ० म०	४००
सर्वोदय पक्षके कार्यक्रमके बारेमें विनति	शंकरराव देव	४००
"भूदान-यज्ञ-आन्दोलन"	कि० घ० म०	४००
शूर क्लर्क		४००
तीन सालका ग्रामसेवा अभ्यासक्रम	शंकरराव देव	४००

www.vinoba.in